संपादक का नोट

प्रिय पाठकों, मैं आपको अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुल्य नाम में नमस्कार करती हूं। मैं मेरे प्रभु यीशु की कृपा और दया के लिए धन्यवाद करती हूं की उनकी सेवा में 15 साल पूरे करने में प्रभु ने मेरी सहायता की।

भजन संहिता 86:13 ''क्योंकि तेरी करूणा मेरे ऊपर बड़ी है; और तू ने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा लिया है।''

प्रभु की दया सबसे अद्भुत है, और प्रत्येक वस्तु से अधिक है। उनकी कृपा के कारण वह हमारे लिए खोज में आया था। प्रभु ने खुद को नम्र किया और हमें उद्धार और शांति और खुशी दी है।

हमारे प्रति उनकी महान दया से उन्होंने हमें नरक की गहराई से बचाया है। राजा दाऊद ने उनकी दया को जानकर, प्रभु की स्तुति की और कहा कि उसकी दया महान है। भजन संहिता 118: 1–2 ''1 हे जाति जाति के सब लोगों यहोवा की स्तुति करो! हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो! क्योंकि उसकी करूणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है याह की स्तुति करो! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा की है! 2 इस्राएल कहे, उसकी करूणा सदा की है।''

प्रभु हम में से प्रत्येक को एक वादा करता है यशायाह 54:10 ''चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाडियां टल जाएं, तौभी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।''

हाँ, उसकी कृपा हमारे लिए पर्याप्त है। उन लोगों के लिए जो प्रभु का भय मानते हैं, उसकी भलाई महान है। भजन संहिता 31:19 ''आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिए रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिए मनुष्यों के सामने प्रकट भी की है!''

बाइबल कहता है भजन संहिता 25: 8 ''यहोवा भला और सीधा है; इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।''

यह दुनिया प्रभु की भलाई से भरी हुई है। जब वह इस दुनिया में था तो वह हमेशा अच्छा काम करता था। प्रेरितों के काम 10: 38 ''कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से

अभिषेक कियाः वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।''

प्रभु का भय मानो और उस पर भरोसा रखों और आप आशीषित होंगे; क्योंकि यहोवा भला है, संकट के दिनों में एक गढ़ है, और वह उन लोगों को जानता है जो उस पर भरोसा करते हैं।

उसने हमें अपनी अच्छाई से बनाया है। कैल्वरी के क्रूस पर भी उसने हमें अपनी भलाई दिखायी है और हमें अनन्त जीवन दिया है। न केवल यह, लेकिन उन्होंने स्वर्ग में हमारे लिए अतुलनीय भलाई रखी है।

आज भी हम सभी अच्छे उपहार ऊपर हमारे पिता से प्राप्त करते हैं। याकूब 1:17 ''क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।''

तो मेरे प्रियजनों, निश्चित रूप से भलाई और दया आपके जीवन के सभी दिनों तक साथ रहेगी।

प्रभु का प्यार महान है। प्रेरित पौलुस एक प्रश्न पूछता हैः अधिक क्या है – विश्वास, आशा या प्यार? इन तीनों की जरूरत है और पौलुस स्वयं यह कहकर जवाब देता है कि प्रेम इन में सबसे महान है ...क्योंकि प्रभु प्रेम है। 1 यूहन्ना 4: 8 '' जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।''

उस प्यार के कारण उसने खुद को हमारे लिए दिया है। उस महान प्रेम को जानकर, प्रेरित पौलुस कहता है रोमियों 5: 7–8 ''7 किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। 8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।''

रोमियों 8:32 ''जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दियाः वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?''

हाँ मेरे प्रियजनों, प्रभु का प्यार हमारे प्रति महान है। तो प्रभु का महान प्रेम आपके साथ और आपके परिवार के साथ हमेशा रहे।

प्रभु आपका भला करे।

प्रभु की सेवा में आपकी

पास्टर सरोजा म.

प्रभु के लिए साहसी बनो!

1 इतिहास 19: 13 ''तू हियाव बान्ध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे, वैसा ही करेगा।'' जब हम अपने जीवन को साहसपूर्वक जीते हैं और प्रभु परमेश्वर में दृढ़ होते हैं, तो हम अपने जीवन में कई जीत हासिल कर सकते हैं। हम अपनी आत्मरिक्ता को भी बचा सकते हैं और प्रभु के नाम को महिमा ला सकते हैं। बाइबल में, हम याकूब के जीवन को देखते हैं, वह प्रभु के साथ एक मजबूत और साहसी जीवन जीता था, इस प्रकार वह अपनी आत्मरिक्ता को बचा सकता था और पाप के लोभ से भाग गया और अपने जीवन में प्रभु के नाम की महिमा करी। प्रभु के लोगों को कभी दोषी नहीं होना चाहिए। आइए हम पढ़ते हैं 1 यूहन्ना 3: 21 –22 ''21 हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है। 22 और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है; क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।'' हमारे दिल को कभी हम से निंदा नहीं करना चाहिए। जब हम प्रभु में विश्वास करते हैं और खुद को पूरी तरह से प्रभु के हाथ में आत्मसमर्पण करते हैं, तो हम कभी भी निन्दित नहीं होंगे। तब प्रभु हमें आशीर्वाद देंगे और जब हम प्रभु के नाम से कुछ भी मांगेंगे, तो वह हमें आशीर्वाद देगा क्योंकि हम उसकी आज्ञा मानते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं। बाइबल में, हम यशायाह 48 में पढ़ते हैं, जिसमें हम पढ़ते हैं 'शत्रु को कभी आराम और शांति नहीं है'। हम भी आराम और शांति प्राप्त कर सकते हैं, केवल तभी जब हम अपने पापों और अधर्म के कामों को प्रभु के हाथ में देते हैं, तो तभी हमें शांति से आशीर्वाद मिलेगा। प्रभु हमारे पापों को क्षमा करता है और इसे कभी याद नहीं करता है। एक बार हमने इसे कबूल कर लिया, प्रभु हमारे पापों को क्षमा करते है और भूल भी जाते हैं। इस प्रकार हमारे अपराध और शर्मिंदगी हम से दूर की जाएगी और हम एक बार फिर प्रभु में साहसी और मजबूत हो सकते हैं। प्रेरितों के काम 28: 31 ''और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।'' प्रेरित पौलुस ने महान साहस और प्रभु के बारे में बिना बाधा के प्रचार किया, केवल तभी वह प्रभु के लिए साहसी बन पाया। इस प्रकार, जब हम अपने आप को प्रभु के हाथ

में देते हैं, उस पर विश्वास करना चाहिए, उसके लहू से धोए जाते है, उसकी आत्मा से भरे जाते है, हम अपने जीवन में साहसी बन सकते हैं। फिर, हमारे पास प्रभु की कृपा होगी और हम जो चाहते हैं वह प्रभु हमारे जीवन में पूरा करेगा। इब्रानियों 10: 19 ''सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।''

पुराने नियम में, हमने कर्मेल पर्वत पर एलियाह की जीत की कहानी पढ़ी है, जहां नबी एलीया ने बाल भविष्यद्वक्ताओं को चुनौती दी थी। उसने उनसे बलिदान का उपभोग करने के लिए अपने भगवान को बुलाने के लिए कहा जो कि उन्होंने उनके सामने रखा था। लेकिन, बाल भविष्यद्वक्ता इस चुनौती को पूरा करने में सफल नहीं हुए। बाइबल के शुरुआती दिनों में, हमने देखा है कि मूसा ने कौन से चमत्कार किए हैं, जो की फ़िरौन ने भी वही चमत्कार किए। मूसा ने अपनी छड़ी को सांप में बदल दिया, फिरौन ने भी इसी तरह के चमत्कार किए और अपनी छड़ी से सांप बनाया। मूसा के माध्यम से प्रभु ने पानी को लहू में परिवर्तित कर दिया, फिरौन ने भी पानी को लाल रंग में बदल दिया। तो विभिन्न तरीकों से शत्रु ने प्रभु के चमत्कारों को नक़ल किया। लेकिन अब हम देखते हैं, नबी एलिय्याह के सामने, बाल भविष्यवक्ता उसके जैसा ही चमत्कार नहीं कर सके। नबी एलियाह बाल भविष्यद्वक्ताओं को चिढ़ाते है और उन्हें कहते है वचन 27 ''दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊंचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, वा कहीं गया होगा वा यात्रा में होगा, वा हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए।'' लेकिन उनके भगवान ने जवाब नहीं दिया और न हीं चमत्कार किया। इसके बाद, नबी एलीया ने अपने लोगों से कहा, ''आइए हम अपने परमेश्वर की स्तुति करें और उसे बुलाएं, बलिदान के लिए एक वेदी बनाओ, बलिदान को कई टुकड़ों में काट दों और वेदी के चारों ओर एक खाई भी बनाओ ताकि वह पानी पकड़ सके।'' एलिय्याह ने अपने लोगों को बलिदान पर पर्याप्त पानी डालने के लिए क्यों कहा, क्योंकि झूठे भविष्यद्वक्ताओं, मायावी और जादूगरों लोगों को धोखा देने और बलिदान से उनके ध्यान को हटाने और बलिदान पर पत्थरों से आग लगने के लिए इस्तेमाल करते थे। इसलिए नबी एलिय्याह जानता था कि बाल भविष्यद्वक्ताओं ने भी उनके बारे में ऐसा ही सोचा था। एलिय्याह शत्रु की हर चालाकी को जानता था, इस प्रकार उसने अपने लोगों को बलिदान के चारों ओर पानी डालने के लिए कहा। अब, विश्वास और साहस में एलिय्याह परमेश्वर से प्रार्थना करता है और प्रभु बलिदान को बुझाने के लिए स्वर्ग से आग भेजता है। सबकुछ बस्म हुआ था, जब की पानी हर जगह से बह रहा था। याद रखें, जब हम खुद को पूरी तरह से प्रभु के हाथों में देते हैं तो हम कभी निन्दित नहीं होंगे। 1 यूहन्ना 3: 21 –22 ''21 हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है। 22 और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता

है; क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।'' फिर, प्रभु हमें आशीर्वाद देंगे और जब हम उसके नाम पर कुछ भी पूछेंगे, तो वह देगा क्योंकि हमने उसके आज्ञाओं का पालन किया है और उसकी इच्छा पूरी की है। नबी एलीयाह को कोई पछतावा नहीं था, वह प्रभु परमेश्वर के नाम पर हिम्मत से और साहसपूर्वक खड़ा था। 1 राजा 18: 33– 38 ''33 तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर धर दिया, और कहा, चार घड़े पानी भर के होमबलि, पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो। 34 तब उसने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो; तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, तीसरी बार करो; तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। 35 और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया। 36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रकट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। 37 हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है। 38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रकट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।'' हमारे दुश्मनों के सामने, हमारे दिल में प्रभु के कामों के लिए हमारे पास साहस और ढृढ़ता होना चाहिए। इस साहस को हासिल करने के लिए, हमें अपने अपराध को दूर करने की आवश्यकता है और इसके बिना हम कभी भी सफलता या जीत नहीं प्राप्त कर सकते हैं। नए नियम में, हम देखते हैं कि प्रभु के शिष्य उसके नाम पर चमत्कार करते हैं, लेकिन शत्रु भी महान शक्ति के साथ समान चमत्कार करता है, अंत में विजय प्रभु अकेले की है। शुरुआत से हमने देखा है कि शत्रु प्रभु के कामों को नक़ल करता है। परन्तु एलिय्याह ने शत्रु को चमत्कार करने की इजाजत नहीं दी बल्कि बदले में प्रभु परमेश्वर का नाम महिमा किया गया। एलिय्याह ने कहा है वचन 36–38 ''36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रकट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। 37 हे यहावा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है। 38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रकट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।'' स्वर्ग से आग ने मिट्टी और पत्थरों से बनी वेदी को भस्म कर दिया, बलिदान और सभी पानी पूरी तरह से बुझ गए थे। इसी प्रकार, परमेश्वर में हमारा विश्वास दृढ़ होना चाहिए, जैसा कि परमेश्वर ने यशायाह 48 में कहा था ''उनके प्यार, उनके काम, उनकी इच्छा और योजना हमारे लिए इस दुनिया में किसी भी तुलना से परे है।'' हमें यह जानना चाहिए, इसे समझना और इसे अपने जीवन में स्वीकार करना चाहिए, केवल

तभी हमारे प्रभु परमेश्वर हमें आशीर्वाद दे सकते हैं। हमारे लिए, हमारे प्रभु स्वर्ग से आग भेजते है, यह इस दुनिया की सामान्य आग नहीं है, बल्कि स्वर्ग से आग है। एलिय्याह ने प्रभु से प्रार्थना करने के बाद यह आग नीचे उतर आई और उसने वेदी, बलिदान, लकड़ी और पत्थरों का उपभोग किया और पानी को भी बुझा दिया। 38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रकट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।'' तब एलिय्याह ने कहा 1 राजा 18: 39– 40 ''39 यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है; 40 एलिय्याह ने उन से कहा, बाल के नबियों को पकड़ लो, उन में से एक भी छूटने न पाए; तब उन्होंने उन को पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जा कर मार डाला।'' उन्होंने चिल्लाया ''प्रभु ही परमेश्वर है, प्रभु ही परमेश्वर है''। एलिय्याह ने सभी बाल भविष्यद्वक्ताओं पर कब्जा कर लिया और उन्हें सताया। ये बाल भविष्यद्वक्ताओं ने इज़राइल में बहुत परेशान किया थे, वे जादूगर और मायावी थे, उन्होंने इस्राएलियों के जीवन को उनके बुरे कामों से नष्ट कर दिया। इस प्रकार एलिय्याह ने उन्हें मारने का आदेश दिया। उन लोगों को याद रखें जो इज़राइलियों पर दुःख और दर्द लाते हैं, जो लड़ते हैं और इस्राएलियों को नष्ट करने की कोशिश करते हैं, प्रभु उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे, हम पढ़ते है वचन ''36 फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रकट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। 37 हे यहावा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।''

हम जानते हैं कि एलिय्याह ने यह सब प्रभु की इच्छा के अनुसार किया था, जो कोई कभी भी इस्राएलियों पर विनाश, दुःख और दर्द लाने के लिए चाहते हैं, प्रभु उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे। इस प्रकार, हमारे प्रभु न तो सोते हैं और न ही उंगते हैं बल्कि हमेशा अपने बच्चों पर देख रहे हैं। हम उसकी आंखों के पुतली हैं, हमें कभी भी किसी भी अपराध को हमारे हिम्मत को तोड़ने के लिए नहीं देना चाहिए, हमें अपने सभी अपराधों को प्रभु के हाथों में देना चाहिए, तभी हम अपने जीवन में साहसी बन जाएंगे। 1 इतिहास 17: 25 ''क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू ने यह कह कर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूंगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।'' दाऊद ने उन चीज़ों को याद किया जो प्रभु ने उसके जीवन में किया था और इसके लिए प्रार्थना करने के लिए उसके दिल में पाया और इसने दाऊद को साहसी बना दिया। प्रेरितों के काम 4: 13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, ओर यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' जब लोगों ने पतरस और यूहन्ना के साहस और

हिम्मत को देखा तो वे आश्चर्यचकित हुए, क्योंकि कल तक वे केवल मछुआरे और एक अशिक्षित लोग थे। लोग आश्चर्यचकित थे कि वे इतने साहसी कैसे हो सकते हैं? वे आज उन्हें प्रचार सुनाते हुए देखकर चिंतित थे। हां, जब हम यीशु के लोगों के साथ होते हैं तो हमें साहस और हिम्मत से आशीर्वाद मिलता है। हम कालेब और यहोशू के बारे में जानते हैं, दोनों प्रभु के प्रिय थे और उनके द्वारा चुने गए थे। हम नहीं जानते कि प्रभु के लिए कौन अधिक प्यारा था – कालेब या यहोशू? लेकिन पुराने करार में लिखा गया है कि यहोशू ने कालेब के ऊपर प्रार्थना की, इसलिए प्रभु ने यहोशू को कालेब के ऊपर प्रार्थना करने का अधिकार दिया। इस प्रकार, हम परिणाम निकालते हैं कि यहोशू कालेब से साहसी था। आइए पढ़ते है यहोशू 14: 13 ''तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया।'' हमारी राय में कालेब महान है। यहां पर, हम देखते हैं कि यहोशू ने कालेब को आशीर्वाद दिया, इसलिए प्रभु ने यहोशू को अधिक ताकत, प्रेम, साहस के साथ आशीर्वाद दिया। यह हमारे लिए जानना महत्वपूर्ण है कि प्रभु हमारी भलाई या महानता को नहीं देखता है, लेकिन वह आज भी हमारे दिल को देखता है। वह हमारे आज्ञाकारिता, साहस और उसके लिए प्यार को देखता है। प्रभु हमें जीवन में तदनुसार आशीर्वाद देंगे। 1 कुरिन्थियों 15: 41 ''सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।'' चंद्रमा की महिमा सूर्य की महिमा से अलग है। जबकि सितारों की महिमा एक–दूसरे से अलग होती है। लेकिन एक सितारे की रोशनी एक और सितारे की रोशनी को पहचान सकती है। दानिय्येल 12: 3 ''तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।'' कई साल पहले, बहुत से लोग हमारी सेवा के खिलाफ थे और हमारे मंत्रालय के बारे में अनुचित तरीकों से बात करते थे, यहां तक कि हमें या मंत्रालय के किसी भी व्यक्ति को जानने के बिना भी। उन्होंने हमारी सेवा के खिलाफ परमेश्वर के शक्तिशाली सेवकों से भी शिकायत की। हमने इसके बारे में कुछ भी नहीं किया, हमने केवल प्रार्थना की और इस समस्या को प्रभु के चरणों में रखा। तमिलनाडु की यात्रा के दौरान हमारे रोज ऑफ़ शेरोन के तमिलनाडु निर्माण के समय, मुझे भाई रवींद्रनाथ से मुलाकात करने का मौका हवाई अड्डे पर मिला। हमने एक–दूसरे को देखा और मैंने कहा ''प्रभु की स्तुति हों'' और उन्होंने जवाब दिया। बाद में, वह उठकर मेरे पास आए और मुझसे कहा, ''मैं तुम्हारे भीतर एक उज्ज्वल प्रकाश देखता हूं'' इसलिए मैंने कहा ''प्रभु की स्तुति हों''। मुझे उनसे बात करने के लिए लगभग 20 मिनट का मौका मिला और हमारे मंत्रालय के खिलाफ कई गलतफ़हमीयों को दूर किया और वह भी चिंतित थे। लेकिन, उन्होंने मुझसे वादा किया कि वह मेरे और हमारे मंत्रालय के लिए प्रार्थना करेंगे। हां, इस धरती पर, केवल एक सितारे की चमक दूसरे की चमक को पहचान सकती है। जब हमारे पास कोई साहस और हिम्मत नहीं होता है तो हम प्रभु के काम नहीं कर सकते हैं और इस दुनिया में प्रभु का काम

नहीं कर सकते हैं। हमारे जीवन में, हमें अपने अपराध और सचेत को प्रभु के हाथों में दे देना चाहिए, केवल तभी हम प्रभु के लिए एक सितारे के रूप में उज्ज्वल चमक सकते हैं। जब हमारे पास हमारे भीतर प्रभु का प्रकाश होता है, तो हर कोई हमारे भीतर प्रकाश को चमकते देख सकता है और इस प्रकार हम इसे दुनिया भर में फैला सकते हैं। हमारे टीएन मंत्रालय का उद्घाटन करने वाले वही रवींद्रनाथजी हैं और मुझे 'जीसस कॉमस' में प्रचार करने के लिए भी आमंत्रित किया गया था, आज तक हमने अकेले प्रभु की महिमा के लिए एक रिश्ता बनाए रखा है। दुनिया हमारे भीतर प्रकाश को पहचान नहीं सकती है, लेकिन केवल प्रभु के लोग ही हमारे भीतर प्रकाश को पहचान सकते हैं।

यीशु मसीह ने अपने 12 शिष्यों को चुना, उन्होंने इन शिष्यों के साथ सबकुछ किया। उन्होंने एक साथ प्रार्थना की, वे एक साथ यात्रा करते थे। लेकिन जब यीशु मसीह के लिए अपनी महिमा दिखाने के लिए समय आया, तो उन्होंने उनमें से केवल तीन ही को चुना, क्योंकि उन्होंने सोचा कि उन्हें यह देखने के लिए योग्य है। आइए पढ़ते है मत्ती 17: 1 –3 ''1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। 2 और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। 3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।''

यीशु ने अपने शिष्यों के बीच पतरस, याकूब और यूहन्ना को चुना और उन्हें अपनी महिमा देखने के लिए साथ ले लिया। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम प्रभु के लिए हिम्मत और साहसपूर्वक से कैसे काम करते हैं। हम उससे कितना प्यार करते हैं? हम उसके लिए क्या करेंगे? इस प्रकार, हमें उसके लहू से धोया जाना चाहिए और अपने जीवन में उसकी कृपा प्राप्त करना चाहिए। आइए पढ़ते है प्रेरितों के काम 4: 13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, ओर यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' प्रभु ने हमें भय का आत्मा नहीं दिया बल्कि हिम्मत और साहस की आत्मा दी है। हमारे प्रभु ने साहसपूर्वक से हमारे पापों को क्रूस पे खुद पर ले लिया और हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। जब हम अपने प्रभु परमेश्वर को साहसपूर्वक स्वीकार करते हैं और हमारा उद्धार प्राप्त करते हैं, तो स्वर्ग में आनंद होता है। जब खोया हुआ मिलता है, तो निश्चित रूप से स्वर्ग में आनंद होता है। आइए हम पढ़ते है 'खोया सिक्का का दृष्टांत' लूका 15: 7– 10 ''7 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं। 8 या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के पास दस सिक्के हों, और उन में से एक खो जाए; तो वह दीया बारकर और घर झाड़ बुहार कर जब तक

मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे? 9 और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी करके कहती है, कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है। 10 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।'' अंत में, निर्णय हमारे पिता के हाथों में है, हमारा जन्मदिन स्वर्ग में मनाया जाएगा। 2 कुरिंथियों 6: 18 ''और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।'' प्रभु हमारे निर्माता, हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु ने हमें अपने बहुमूल्य लहू से खरीदा है, वह हमारा पिता होगा और हम उसके पुत्र और बेटियां होंगे।

इस प्रकार हमें अपने भीतर से हमारे सभी अपराधों को हटाना चाहिए, केवल तभी हम प्रभु के लिए दृढ़ और साहसी बन सकते हैं। जब हमारे भीतर अपराध होता है, हम खुले तौर पर दूसरों से प्यार नहीं कर सकते हैं, हम एक–दूसरे पर ईर्ष्या करेंगे और एक–दूसरे की खुशी में हिस्सा नहीं ले सकते। हम इस दुनिया में अपने पापों में जारी रहेंगे और विनाश हो जायेंगे। केवल जब हम अपने भीतर से अपराध को हटा देंगे, प्रभु को स्वीकार करगें और उसके लहू से धोए जाएंगे, तभी हम उसके पुत्रों और बेटियों के रूप में स्वीकार किए जाएंगे। इस प्रकार हमें अपने जीवन को प्रभु के हाथों में दे देना चाहिए, वह कुछ को दंडित करने के लिए पक्षपातपूर्ण प्रभु नहीं है और दूसरों को यूँही मुक्त कर देगा ऐसा नहीं है। जब हमारे बच्चे गलती करते हैं, तो हम उन्हें सही करते हैं। फिर, हमें अपने जीवन में प्रभु के ताड़ना को स्वीकार क्यों नहीं करना चाहिए। इस प्रकार वह हमें सुधारता है और हमें सलाह देता है, क्योंकि प्रभु हमसे प्यार करता है। जब हम परमेश्वर के बच्चे बन जाते हैं, तो शत्रु भट्ठी को सात गुना अधिक बढ़ाता है और हमें इसमें डाल देगा, लेकिन यह हमारा परमेश्वर अकेला है जो हमें छुड़ाएगा और हमें बचाएगा। इसलिए, आज एक बार फिर प्रभु ने हमें हमारे भीतर से हमारे अपराध और शर्मिंदगी को दूर करने का एक और मौका दिया है और प्रभु के हाथों में अपना हाथ देकर हिम्मत और साहसपूर्वक से चलना चाहिए।

प्रभु इस वचन से आशीर्वाद दें! प्रभु की स्तुति हो!

प्रभु के सेवा में,

पास्टर सरोजा म.